Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

दुष्यंत कुमार के काव्य में प्रतीक विधान

Maya[1]* Dr. Meenu[2]

[1] Research Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - प्रतीक मूलतः लाक्षणिक शब्द शक्ति है। प्रतीक में एक मूर्तिकला तथा चित्रात्मकता रहती है, जिसके कारण इसमें प्रयोजनवती लक्षणा का भाव अधिक विद्यमान होता है। प्रतीक ऐसे शब्द चिह्नों या वस्तु को कहा जाता है, जिसके माध्यम से किसी अन्य वस्तु का बोध होता है। परन्तु अन्य वस्तु के साथ-साथ इसमें इस वस्तु की निजता तथा वस्तु का स्वरूप भी यथावत् विद्यमान रहता है। साहित्य के क्षेत्र में प्रतीक एक प्राचीन अवधारणा है। साहित्य में जिन शब्दों के समुच्चय से साहित्य का सर्जन किया जाता है, वे शब्द किसी एक भाव को प्रकट न करके किसी अन्य भाव, संवेगों या मनः स्थितियों का प्रतीक बन जाते है। वस्तुतः एक शब्द के भीतर ही एक अन्य अर्थ भी सूप्त अवस्था में विद्यमान रहता है, या दूसरा अर्थ भी विद्यमान रहता है। यह दूसरा अर्थ ही प्रतीक का कार्य करता हैं।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावनाः

फिल्मों में अधिकतर एक संवाद अभियक्त किया जाता है कि 'कानून के हाथ बड़े लम्बे होते है' यहाँ पर हाथ का एक अर्थ तो सामान्य है। परन्तु कानून कोई व्यक्ति नहीं हैं, जिसके हाथ हों। यहाँ पर हाथ का अर्थ कानून की 'पहुँच' से लिया जाएगा। अतः यहाँ पर हाथ का प्रतीकार्य या लक्षणार्थ कानून की पहुँच के रूप में ग्रहण किया जाएगा। इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में प्रतीक की परिभाषा इस रूप में दी गई है-प्रतीक शब्द उस दृश्य वस्तु के लिए आता है, जो अपने सादृश्य के कारण, साहचर्य से अदृश्य वस्तु का ज्ञान कराए।

The term given to visible object repersenting to the mirds the semblene of something which is not shown but relized by asociation with it.[1]

डॉ. कृणदेव शर्मा ने समीक्षा सिद्धांत नामक ग्रंथ में प्रतीक को परिभाषित करते हुए कहा है कि-किसी भाव को स्पष्ट रूप से कहने के लिए एक आसान तरीका यह है कि वह क्या है, न कहकर यह कहा जाए की यह किसी वस्तु के अनुरूप है। किसी अन्य वस्तु से उसकी तुल्यरूपता अथवा स्पष्ट किया जा सकता हैं।[2]

हिन्दी साहित्य कोश में प्रतीक की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-"प्रतीक शब्द का प्रयोग उन दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य (अगोचर या अप्रस्तुत) का प्रतीक विधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है। यह कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्त्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली समान अनुरूप वस्तु ही प्रतीक है।[3]

कोई भी साहित्यकार जिस परिवेश में रहता है, उस परिवेश से वह प्रभावित होता है। वह स्वयं भी परिवेश को प्रभावित करता है। प्राचीन काल के लेखकों का परिवेश इतना यांत्रिक नहीं था, जितना आज के समय में है। इस यांत्रिकता पूर्ण जीवन में साहित्यकार के लिए प्रतीकों की परिधि भी बढ़ गई है। इसके साथ-साथ सम्बंधों में रिक्तता बढ़ जाने के कारण वह एकाकीपन की ओर बढ़ रहा है, जिसके कारण वह वास्तविक संसार की रिक्तता का चित्रण तो करता है, परन्तु इस चित्रण के लिए वह प्रतीकों की सर्जना अवश्य करता है।

दुष्यंत कुमार भी आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। उन्होंने अपने समय की विडम्बनाओं को प्रतीक के माध्यम से कहते भी बड़ी सफलता पाई है। 'ओ गुलाब के फूलो!' नामक कविता में वे कहते है कि-

ओ गुलाब के फूलो!

सुन्दर गंध तुम्हारी,

www.ignited.in

देखो गमक रही वह क्यारी

जिसमें हो तुम

ओ गुलाब के फूलो!

यह मत भूलो भाई!

हर शहनाई में होता थोड़ा मातम है,

मैंने तुमको दिया जन्म है

आओ अपनी गंध लिए

मुझमें बस जाओ।[4]

प्रस्तुत कविता में 'गुलाब के फूलो' से पूँजीपति वर्ग को प्रतीक का विषय बनाया गया है। इसी प्रकार 'मैंने तुमको दिया जन्म है' - गमले की मिट्टी (शोषिक वर्ग) का प्रतीक बनकर उभरी है।

'बीता सपना' नामक कविता में दुष्यंत कुमार ने अनेक प्रतीकों एक साथ प्रकट करने में सफलता प्राप्त की है-

कोई तो सुनता होगा,

मेरी आवाजों को

युग की समस्त मूकता को

चुनौती दे।

क्षुद्र रूढ़ियों के नाग-फन

कुचलकर,

मरुस्थल में खोता हुआ,

प्यास की नौका को

आया उलाँघ कई सागर

गिरि-ज्वाल-शिखर

फिर भी सबसे नीचा स्वर,

मेरी विनमता है।[5]

यहाँ पर कवि ने 'क्षुद्र रूढ़ियों के नागफन' का प्रतीक बनाया है तथा इन रूढ़ियों को कुचलने की आवश्यकता बताई है। जीवन को मरुस्थल का प्रतीक बनाया है तथा 'प्यास की नौका' को जीवन की इच्छाओं या आकांक्षाओं का प्रतीक बनाया गया है, 'आया उलाँघ कई सागर' से प्रतीकार्य निकलता है कि मुझे अपने जीवन में कई व्यक्तियों के विरोध का सामना करना पड़ा था।[6]

मैं और मेरा दुःख नामक कविता में दुष्यंत कुमार ने दुःख को एक चिड़िया के अबोध बच्चे का प्रतीक दिया है-

दुःख

किसी चिड़ियाँ के अभी जन्मे बच्चे सा

किन्तु सुखः

तमंचे की गोली जैसा

मुझको लगा है।

आप ही बताएँ,

क्या आपने किसी चलती हुई

गोली को चलते

या अभी जन्म बच्चे को

उड़ते हुए देखा है।[7]

इस कविता में दुःख को चिड़ियाँ के अभी-अभी जन्में बच्चे का प्रतीक बनाया गया है तथा सुख को बन्दूक की गोली का प्रतीक बनाया गया है। जिस प्रकार तमंचे की चलती हुई गोली दिखाई नहीं देती, उसी प्रकार सुख भी जीवन में आता तो है, परन्तु तमंचे की गोली की तरह तुरन्त ही चला जाता है। इसी प्रकार दुःख चिड़ियाँ के बच्चे की तरह है। वह हमारे जीवन से कभी भी नहीं उड़ता है। अर्थात् दुःख का निवास स्थाई है। यह हमारे जीवन से कभी भी नहीं उड़ता है।

'दो पोज' नामक कविता में कवि दुष्यंत कुमार अपनी प्रिया या पत्नी के विभिन्न स्वरूपों को प्रतीक के माध्यम से प्रकट करते हुए कहते हैं-

सद्यस्नात तुम,

जब आती हो,

मुख कुंतलों से ढका रहता है

बहुत बुरे लगते हैं, वे क्षण जब

राहु से चाँद ग्रसा रहता है।

पर जब तुम

केश झलक देती हो अनायास,

तारों सी बूंदें,

बिखर जाती है आसपास,

मुक्त हो जाता है चाँद

तब बहुत भला लगता है।[8]

प्रस्तुत कविता में कवि ने अभी-अभी स्नान करके बाहर निकली हुई अपनी पत्नी का रेखांचित्र अंकित किया है। वह अपनी पत्नी के मुख को चाँद का प्रतीक देता है तथा उसके काले बालों को राहु का प्रतीक देता है। जिस प्रकार राहु नामक छाया ग्रह चाँद को ग्रस लेता है, तथा चाँद को छिपा लेता है, उसी प्रकार इन काले बालों ने उसकी प्रमिका के मुख रूपी चन्द्रमा को छिपा लिया है। जब कवि की पत्नी अपने बालों को झटक देती है, तो चारो ओर छोटी-छोटी बूंदे छिटक जाती है। इन छोटी-छोटी बूंदों को भी 'तारों' का प्रतीक दिया गया है।

'प्रश्न दृष्टियाँ' नामक कविता में भी कवि ने एक साथ कई प्रतीकों की सृजना की है। कवि दुष्यंत कुमार कहते हैं कि-

इस समर को दूर से देखने वालो,

यह सरल है,

आहतों पर दया दिखलाओ,

'आह बेचारे' कहो,

या साथ इनके तिक्त संवेदना के क्षण सहो,

औ' पराजय पर विफल होकर रचो साहित्य,

किन्तु जो सैनिक पराहत

भूमि पर लूंठित पड़े हैं,

तुम्हारा साहित्य उन तक नहीं जाता,

यह तटस्थ दया तुम्हारी,

और संवेदना,

उनको बींधती हैं।[9]

प्रस्तुत कविता में 'समर' जीवन का प्रतीक है। 'आहत' गरीब लोगों का प्रतीक है तथा 'तटस्थ दया' केवल दया दिखलाने तथा वस्तुस्थिति न बदलने के प्रतीक के रूप में व्यक्त किया गया है।

वस्तुतः कोई भी कवि अपनी बात को सीधे-सीधे शब्दों में न कहकर उन्हें विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से ही कहने का प्रयास करता है। जिस कवि के साहित्य में जितने अधिक प्रतीक होंगे, वह कवि उतना ही सफल माना जाएगा। कवि दुष्यंत कुमार ने भी अपने साहित्य को सीधी-सपाट भाषा में न रचकर उन्हें प्रतीकों के माध्यम से ही रचा है। आवश्यकता इस बात की है कि उनके प्रतीकों के निहितार्थ दुनिया के सामने रखे जाएँ। दुष्यंत कुमार का समस्त साहित्य मानवता के कल्याण का महान स्रोत है। जब तब उन्होंने प्रतीकों के जग के सामने नहीं लाया जाएगा, तब तक कवि के मूल भाव भी नहीं समझे जा सकते।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. हिन्दी गजल का सौंदर्य-शास्त्र, डॉ. रामप्रकाश पथिक, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा-2004, पृ॰-177
2. समीक्षा सिद्धांत, डॉ. कष्णदेव शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, अष्टम् संस्करण-1982, पृ॰-263
3. हिन्दी साहित्य कोश, (संपादक-धीरेन्द्र वर्मा) ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणासी-1975, पृ॰-471
4. इन्साईक्लोपीडिया, ब्रिटेनिका
5. दुष्यंत कुमार रचनावली, भाग-1, (संपादक-विजय बहादुर सिंह) किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली। पृ॰-278
6. वहीं- पृ॰-315
7. वहीं- पृ॰-342-343
8. वहीं- पृ॰-358
9. वहीं- पृ॰-475

Corresponding Author

Maya*

Research Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan